ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(8): 408-411
www.allresearchjournal.com
Received: 07-06-2020
Accepted: 23-07-2020

सरिता देवी
शोधकत्रीं, शिक्षाशास्त्र विभाग, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ0 संगीता चौहान
सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
सरिता देवी
शोधकत्रीं, शिक्षाशास्त्र विभाग, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सावित्रीबाई फुले के स्त्री शिक्षा से सम्बन्धित विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सरिता देवी और डॉ0 संगीता चौहान

सारांश
सावित्रीबाई फुले के समय में शिक्षा का कोई भी साधन न होने पर भी सावित्रीबाई फुले एक क्रांतिज्योति बनकर शिक्षा की अलख स्त्रियों मे जगाई जिसको उदाहरण बनाकर शोध छात्रा द्वारा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी शिक्षा को बढ़ाने की महत्ता को बताने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध की प्रकृति मिश्रित (गुणात्मक एवं मात्रात्मक) है। क्योंकि इसमें शोध छात्रा द्वारा सावित्रीबाई फुले के जीवन संबंधी पहलुओं को समझने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया है। 2019–20 के स्नातक तथा परास्नातक स्तर के विद्यार्थी शोध छात्रा के शोध की जनसंख्या है जिसमें ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। 206 प्रतिदर्श लिया गया है जिसमें स्नातक तथा परास्नातक के सभी विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया तथा उद्देश्यपूर्ण अध्ययन किया गया। प्रस्तुत शोध में शोध छात्रा द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया गया जिसमें 33 प्रश्नों को विद्यार्थियों के समक्ष रखा गया। शोध छात्रा द्वारा सर्वप्रथम प्रश्नावली बनाने हेतु विभिन्न किताबों तथा लेखों का अध्ययन करने के पश्चात् प्रश्नावली तैयार करके सभी विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया ऑनलाइन सर्वे द्वारा ली गई जिसमें 230 विद्यार्थियों में से 206 विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया पूर्ण रूप से प्राप्त होने पर इस सर्वे में उनको सम्मिलित किया गया। प्रस्तुत शोध में प्रतिशत विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष यह निकलकर आया कि सावित्रीबाई फुले जैसी महान समाजसेविका के बारे में अधिकाशतः लोग अनभिज्ञ है उनके जीवन से सम्बन्धित, कृतित्व से सम्बन्धित पुस्तकों, पाठ्य सामग्री की कमी है जिसकी अनुभूति शोध छात्रा को इस लघुशोध प्रबन्ध को प्रस्तुत करने के दौरान हुई।

कूट शब्द: सावित्रीबाई फुले, स्त्री शिक्षा, परिप्रेक्ष्य में नारी शिक्षा

प्रस्तावना
प्राचीन भारत में स्त्रियों को सम्मानजनक स्थान प्राप्त था पुरुषों की भांति स्त्रियों को भी शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार प्राप्त था। प्राचीन भारत में अनेक विदुषी महिलायें थी जैसे–लोपामुद्रा, गार्गी, विश्वतारा आदि। ऐसे ही बौद्धकाल में भी स्त्रियों के लिए शिक्षा की पृथक व्यवस्था की गई, इस प्रकार स्त्री शिक्षा का संगठित प्रयास सर्वप्रथम बौद्धों के द्वारा किया गया. इसके बाद हिन्दू धर्म के पुनरूत्थान होने से स्त्री शिक्षा का विरोध किया गया।

अगर बात करे हम मध्यकाल की, तो मध्यकाल में पर्दा प्रथा बढ़ गयी जिसके फलस्वरूप बाल विवाह की प्रथा शुरू हुई, जिससे अल्प आयु में ही विवाह हो जाने के कारण स्त्रिया उच्च शिक्षा से वंचित रह गई।

केवल उच्च राजघरानों में ही व्यक्तिगत शिक्षा दी जाती थी अन्य स्त्रियों के लिए शिक्षा की कोई व्यवस्था नही थी फिर भी इस युग में भी विदुषी स्त्रियों की कमी नहीं थी जैसे– गुलबदन बेगम, नूरजहाँ, रजिया बेगम आदि। 18वीं शताब्दी में स्त्री शिक्षा में भारी कमी आयी, परिणामस्वरूप, 19वीं शताब्दी के आरम्भ में केवल 1 प्रतिशत लड़कियां ही पढ़ सकती थी ऐसी स्थिति में एक मसीहा अर्थात् सावित्रीबाई फूले का आगमन होता है, जिन्होंने स्त्री शिक्षा के लिए प्रथम स्कूल खोले, जनसेवा हेतु हॉस्पिटल खोले तथा अनेक आन्दोलन चलाये।

कहा जाता है कि हर कामयाब पुरुष के पीछे एक महिला का हाथ होता है, इसी प्रकार सावित्री बाई फूले के कामयाबी के पीछे उनके पति ज्योतिबा फूले का हाथ था जिन्होनें उन्हें आगे बढ़ाने में, तथा शिक्षित करने में अपना पूरा सहयोग किया।

सावित्रीबाई फूले ने अनेक संघर्ष किये तथा स्त्री शिक्षा हेतु विद्यालय खोले जिससे स्त्रियाँ शिक्षित होकर आत्मनिर्भर बन सके। इन्होंने बाल–विवाह, पर्दाप्रथा, सतीप्रथा आदि समाजिक कुरीतियों को समाप्त करने हेतु स्त्रियों का शिक्षित होना ही एक मात्र विकल्प समझा तथा हर संभव प्रयास किया कि स्त्रियाँ शिक्षित होकर जागरूक तथा आत्मनिर्भर बन सके।

सवित्रीबाई फुले एक उत्तम अध्यापिका होने के साथ–साथ निःस्वार्थ समाज सेविका भी थी तथा इसके लिए उन्होंने निशुल्क विद्यालय, अस्पताल अनाथ–आश्रम आदि खोले। सावित्रीबाई फुले का विवाह अल्पायु में हो जाने के कारण उन्होंने अपने पति ज्योतिबा द्वारा शिक्षा ग्रहण किया। ज्योतिबाराव फुले तथा सावित्रीबाई फुले ने मिलकर लगभग 100 से ज्यादा विद्यालय खोले, अतः इन्होंने ससुराल में रहकर समाज से लड़कर स्त्रियों को शिक्षित करने का हर संभव प्रयास किया तथा सामाजिक बदलाव लाने हेतु स्त्रियों को उनके घर में जाकर तिक्षा देती थी तथा अनेक प्रकार के समस्याओं का सामना करती थीं। इन्होंने बाल विवाह, सती प्रथा जैसे कुरीतियों को भी समाप्त करने का प्रयास किया तथा लोगों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने हेतु अस्पताल भी खोले।

महाराष्ट्र की प्रख्यात लेखिका इन्दुमती केलकर एक लेख में सावित्रीबाई फुले के साहस के सम्बन्ध में कहती हैं–

"किसी अज्ञानी माँ–बाप के अनाथ बच्चे को गोद लेकर उसका अपने बच्चे के समान पालन–पोषण करने वाली अन्तःकरण की कोई स्त्री हो सकती है, किन्तु किसी विधवा के अनैतिक सम्बन्धों से जन्में बालक को अपने बच्चे के समान पोषण करने वाली स्त्री दुर्लभ है।" सावित्रीबाई फुले ने एक तरुण ब्राहमण विधवा 'कप्रीबाई' के अनैतिक सम्बनयों से जन्मे बालक को, जिसके बाप का पता नही, को गोद लिया यह साहस केवल भावुक होकर मानवतावादी भावना से उन्होंने किया।

शोध समस्या का कथन

"सावित्रीबाई फुले का स्त्री शिक्षा से सम्बन्धित विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

शोध कार्य का महत्व

वर्तमान समय में महिलायें विभिन्न क्षेत्रों में जैसे राजनीतिक ,आर्थिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभा रही है। इसका सबसे बड़ा श्रेय 19वीं सदी की प्रमुख स्त्रियों को जाता है जिन्होने शिक्षा की अलख जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जिनमें से एक थीं सावित्रीबाई फुले जिनका स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सावित्रीबाई फुले के शैक्षिक विचार, सामाजिक विचार, क्रांतिकारी सोच आधुनिक युग में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सावित्रीबाई फुले के समय में शिक्षा का कोई भी साधन न होने पर भी सावित्रीबाई फुले एक क्रांतिज्योति बनकर शिक्षा की अलख स्त्रियों मे जगाई जिसको उदाहरण बनाकर शोध छात्रा द्वारा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी शिक्षा को बढ़ाने की महत्ता को बताने का प्रयास किया गया है।

शोध अध्ययन का उद्देश्य

1. सावित्रीबाई फुले के जीवन का अध्ययन करना।
2. सावित्रीबाई फुले के स्त्री शिक्षा में योगदान का अध्ययन।
3. सावित्रीबाई फुले का समाजिक क्षेत्र में किये गये योगदान का अध्ययन।
4. सावित्रीबाई फुले के कातिकारी विचारों का अध्ययन।
5. सावित्रीबाई फुले के स्त्री शिक्षा से सम्बन्धित विचारों का वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन।

अध्ययन का औचित्य

ऐतिहासिक धर्म ग्रन्थों से यह परिलक्षित होता है कि प्राचीन काल में स्त्री को वासना पूर्ति तथा घरेलू कार्य करने हेतु साधन मात्र समझा जाता था। स्त्री को शिक्षा पाने का कोई अधिकार नही था फलस्वरूप प्रारम्भ में अंग्रेजी शासन ने भी इस बात को धार्मिक समझकर स्त्री शिक्षा की ओर ज्यादा ध्यान नही दिया। वर्तमान समय में भी स्त्रियों को भले ही संवैधानिक अधिकार द्वार विभिन्न क्षेत्रों में स्वतंत्रता तथा संरक्षण का अधिकार मिल गया है, परन्तु नारी शिक्षा तथा सशक्तिकरण की अगर हम बात करे तो वह लक्ष्य नही प्राप्त हुआ है जहाँ पर पहुंचना चाहिये, इसी संदर्भ में शोधकत्री द्वारा लघु शोध प्रबन्ध के माध्यम से यह विषय चुना गया है जिससे नारी शिक्षा को और अधिक सशक्त बनाने में सहयोग मिल सके।

शोध अध्ययन की परिसीमाएं

प्रस्तुत शोध के स्वरूप एवं आकार को निम्नलिखित प्रकार परिसीमित किया गया है–

1. सावित्रीबाई फुले के विभिन्न क्षेत्रों में किये गये कार्यो का गहन अध्ययन निर्धारित समय में कर पाना सम्भव नही है। अतः हमने केवल स्त्री शिक्षा से जुड़े क्षेत्रों को अध्ययन का आधार बनाया है।
2. शोध छात्रा द्वारा समय सीमा का निर्धारित होना एवं सीमित संसाधनों की उपलब्धता आदि को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोत का प्रयोग किया गया है। जिसको सीमित संसाधनों के माध्यम से सार्थक बनाने का प्रयास किया गया है।
3. शोध छात्रा द्वारा प्रस्तुत शोध को सार्थक बनाने हेतु प्रश्नावली विधि का प्रयोग विद्यार्थियों पर ऑनलाइन आकड़ा संग्रह द्वारा किया गया है जिससे सावित्रीबाई फुले के जीवंत रूप को बेहतर ढंग से समझा जा सकें।
4. शोध छात्रा द्वारा प्रस्तुत शोध में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र की स्नातक व परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों को ही ऑनलाइन सर्वे में रखा गया है।
5. समयाभाव के कारण शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली विधि का प्रयोग एक सीमित क्षेत्र में विभिन्न परिवेशों से आई हुई विद्यार्थियों पर किया गया है।
6. शोध छात्रा द्वारा ऑनलाइन सर्वेक्षण किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

शोध छात्रा द्वारा प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध में विभिन्न प्रकार के प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध सम्बन्धी अभिलेखों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों आदि का अध्ययन किया गया है जो सावित्रीबाई फुले के जीवन सम्बन्धी पहलुओं को समझने में सहायक सिद्ध हुये जिनका विवरण निम्नलिखित है।

हॉगन, चेयरमेन (2008), ने अपने शोध विषय "रोल ऑफ एजुकेशन इन वुमन इम्पॉवरमेंट" में पाया कि शिक्षा हमें बाधाओं–धार्मिक, भाषायी, सांस्कृतिक, राजनीतिक, लिंग और भौगोलिक को तोड़ने में सक्षम बनाती है। शिक्षा सही और गलत के बीच फर्क को बताती है इसलिए महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की प्रमुख भूमिका होती है। त्रिपाठी, रचना (2009), ने अपने शोध विषय "रोल ऑफ एजुकेटेड वुमन इन सोशल मोविलिटी" में पाया कि सामाजिक गतिशीलता सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही हो सकते हैं। महिलाओं के शैक्षणिक विकास में जागरूकता, ध्यान, सजगता एवं रूचि का बहुत महत्व होता है, जिसके द्वारा वह समाज में शिक्षा के द्वारा एक महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण करती है। एच. इरफान (2013), ने अपने शोध विषय "हायर एजुकेशन एण्ड इम्पॉवरमेण्ट ऑफ मुस्लिम वुमन में पाया कि उच्च शिक्षा में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है जिसके द्वारा महिलाओं ने एक मजबूत मुकाम हासिल किया है। महिलाओं का शैक्षिक स्तर ऊपर उठाने के कारण वे एक बेहतर समाज का निर्माण करने में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। खातून, उजमा (2015), ने अपने शोध विषय ''एजुकेशन एण्ड इम्पॉवरमेण्ट ऑफ वुमन इन इण्डिया'' में पाया कि नारी सशक्तिकरण में शिक्षा की अहम भूमिका होती है। भ्ज्ञारत में शिक्षा का स्तर पुरूषों की तुलना में काफी कम है अतः नारी की शिक्षा पर ध्यान देना आवश्यक है।

मनीराजू, एम (2015), ने अपने शोध विषय "स्ट्टेस ऑफ वुमन एजुकेशन इन इण्डिया : ऐन ओरवरव्यू" में पाया कि महिलायें एक राष्ट्र को प्रगतिशील बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और इसे विकास की ओर ले जाती है। भारत जैसे देश में पुरूषों की तुलना में महिला की साक्षरता दर काफी कम है इसके साथ ही लैंगिक भेदभाव भी है। शिक्षा विकास की आजादी के सुनहरे दरवाजे खोलने की कुंजी है। अतः महिला सशक्तिकरण हेतु महिला की शिक्षा पर ध्यान देना आवश्यक है। चौहान, प्रिया भारती (2017), ने अपने शोध विषय "एजुकेशनल स्ट्टेस ऑफ दलित वुमेन इन इण्डिया चेन्ज एण्ड चैलेन्जेस" में बताया कि भारत में वर्तमान समाज में स्त्रियों की दशा में सुधार आया है तथा स्त्रियाँ पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर समाज में प्रगति की ओर अग्रसर है। रीता, (2018), ने अपने शोध विषय "सावित्रीबाई फुले–ए बायोग्राफी स्टडी" में पाया कि सावित्रीबाई फुले एक क्रान्तिज्योति थी जो बचपन से ही निडरता से आगे बढ़ी तथा विभिन्न प्रकार के सामाजिक बंधनों को तोड़कर नारी शिक्षा, समाजसेवा आदि में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे बाल विवाह, सतीप्रथा आदि को समाप्त करने में आगे बढ़ी, उनका योगदान सराहनीय है। गौतम, नीरज कुमार (2019), ने अपने शोध विषय "भारतीय दलित समाज की शिक्षा व्यवस्था में डॉ0 अम्बेडकर व सावित्रीबाई फुले का अध्ययन" में पाया कि सावित्रीबाई फुले एक क्रांतिज्योति के रूप में तत्कालिक समाज में उभर कर आयीं उन्होंने महिलाओं के लिए अनेक विद्यालय तथा सेवाश्रम खोले जिससे महिलाओं को आत्मनिर्भर तथा जागरूक बनाया जा सके। सविता (2020), ने अपने शोध विषय "क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले" में पाया कि महिलाओं को इतनी ममतामयी नहीं होना चाहिए कि अपना मकसद ही दांव पर लगा दे। महिलाओं को परिवार और समाज आज भी कौटुम्बिक सम्पत्ति मानकर चलने का अभ्यस्त है, भले ही वह राष्ट्रीय स्तर पर कीर्तिमान स्थापित कर चुकी है। सिंह, शिशुपाल (2020), ने अपने शोध विषय "ऐन इन्क्वायरी इन टू द आइडिया फॉर हैप्पीनेस" में पाया कि शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य भावनाओं संबंधों सामाजिक जुड़ाव एवं आपसी तालमेल को बेहतर ढंग से समझ पाता है। शिक्षा जीवन को सुखमय बनाने का माध्यम है, शिक्षा हमारे बेहतर भविष्य के निर्माण में मदद करती है।

शोध अध्ययन की विधि

अध्ययन की प्रकृति :– प्रस्तुत शोध की प्रकृति मिश्रित (गुणात्मक एवं मात्रात्मक) है। क्योंकि इसमें शोध छात्रा द्वारा सावित्रीबाई फुले के जीवन संबंधी पहलुओं को समझने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया है।

जनसंख्याः– 2019–20 के स्नातक तथा परास्नातक स्तर के विद्यार्थी शोध छात्रा के शोध की जनसंख्या है जिसमें ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को शोध छात्रा द्वारा सम्मिलित किया गया है।

प्रतिदर्श प्रविधिः– शोध छात्रा द्वारा 206 प्रतिदर्श लिया गया है जिसमें स्नातक तथा परास्नातक के सभी विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया तथा उद्देश्यपूर्ण अध्ययन किया गया।

उपकरणः– प्रस्तुत शोध में शोध छात्रा द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया गया जिसमें 33 प्रश्नों को विद्यार्थियों के समक्ष रखा गया। प्रस्तुत शोध में कथनों की रूपवैधता को शोध निर्देशिका के माध्यम से जाँचा की गया है जिसमें हां/नहीं के कथन दिये गये हैं सही कथन पर 1 एवं गलत कथन पर 0 अंकन किया गया है।

1. क्या आप सावित्रीबाई फुले को जानते हैं?
2. सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम महिला राज्यपाल थीं।
3. क्या सावित्रीबाई फुले ने दलितों, अछूतों में शिक्षा की भावना जागृत करने का कार्य किया?
4. क्या सावित्रीबाई फुले का लक्ष्य नारियों का चौमुखी विकास करना था?
5. सावित्रीबाई फुले ने विधवा–पुनर्विवाह का खुलकर विरोध किया।
6. सावित्रीबाई फुले धार्मिक पाखण्ड व ब्राह्मणों के धार्मिक आडम्बरों का समर्थन करती थी।
7. सावित्रीबाई फुले यह मानती थीं कि 'सरस्वती' ही ज्ञान की देवी है।
8. महिलाओं के सशक्तिकरण में सावित्रीबाई फुले का आशिंक योगदान रहा है।
9. सावित्रीबाई फुले समाजसेविका, समाज सुधारक एवं कुशल अध्यापिका थीं।
10. सावित्रीबाई फुले का महिलाओं हेतु विद्यालय खोलने का उद्देश्य स्थिति में सुधार, आत्मनिर्भर बनाना एवं समाज में सम्माजनक स्थान दिलाना था।
11. क्या सावित्रीबाई फुले 19वीं शताब्दी की पहली भारतीय समाज सुधारक थीं तथा भारत में महिलाओं के अधिकारों को विकसित करने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा?
12. सावित्रीबाई फुले ने जीवनभर सवर्ण समाज की महिलाओं के उद्धार के लिए कार्य किया।
13. सावित्रीबाई फुले को उनकी अंग्रेजी कविताओं के लिए प्रसिद्धि प्राप्त है।
14. दुनियां में लगातार विकसित और मुखर हो रही नारीवादी सोच की ठोस बुनियाद सावित्रीबाई फुले ने डाली।
15. 19वीं शताब्दी के आरम्भ में महिलाओं की स्थिति संतोषजनक थी।
16. सावित्रीबाई फुले सवर्ण परिवार की थी।
17. सावित्रीबाई फुले ने बालिकाओं (महिलाओं) के लिए पहला विद्यालय झांसी में खोला।
18. भारत में महिलाओं को शिक्षित करने का अभियान सबसे पहले सावित्रीबाई फुले ने चलाया।
19. सावित्रीबाई फुले के दत्तक पुत्री का नाम यशोदा था।
20. सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं के कल्याण हेतु विधवा प्रसूतिगृह, बाल हत्या प्रतिबंधकगृह और अनाथालयों की स्थापना करवायी।
21. 'काव्यफुले' ज्योतिबा फुले की रचना है।
22. सावित्रीबाई फुले ने सतीप्रथा, बाल विवाह जैसी कुरीतियों और समाज में फैले अंधविश्वास का खुलकर समर्थन किया।
23. सावित्रीबाई फुले के अद्वितीय योगदान के बारे में जानना समाज के केवल उच्च वर्ग के लिए आवश्यक है।
24. 'स्त्री मुक्ति दिवस' सावित्रीबाई फुले की जयन्ती 3 जनवरी को मनायी जाती है।
25. रात्रिकालीन पाठशालाओं की शुरूआत फुले–दंपति ने किया।
26. सावित्रीबाई फुले को शिक्षित करने का श्रेय महात्मा गॉधी को जाता है।
27. सावित्रीबाई फुले 'सत्शोधक समाज' का विरोध करने वाली प्रथम नेत्री थी।
28. सावित्रीबाई फुले 'नवजागरण' की प्रथम भारतीय समाज सेविका एवं अध्यापिका थी।
29. फुले दंपति द्वारा खोले गये 'नार्मल स्कूल' में पढ़ी फातिमा शेख इस स्कूल की प्रथम छात्रा और प्रथम भारतीय मुस्लिम स्त्री अध्यापिका थी।
30. सावित्रीबाई फुले की मृत्यु कैंसर से हुई।
31. क्या सावित्रीबाई फुले के स्त्री शिक्षा से संबंधित विचारों का वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन आवश्यक है?

32. सावित्रीबाई फुले अपने लेख–कविताओं के माध्यम से समाज को देवी देवताओं और मूर्ति पूजा की महत्ता के बारे में बताना चाहती थीं।
33. सावित्रीबाई फुले पुर्नजन्म पर विश्वास करती थीं।

आँकड़ा संग्रहण की प्रविधि :– शोध छात्रा द्वारा सर्वप्रथम प्रश्नावली बनाने हेतु विभिन्न किताबों तथा लेखों का अध्ययन करने के पश्चात् प्रश्नावली तैयार करके सभी विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया ऑनलाइन सर्वे द्वारा ली गई जिसमें 230 विद्यार्थियों में से 206 विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया पूर्ण रूप से प्राप्त होने पर इस सर्वे में उनको सम्मिलित किया गया।

प्रयुक्त संख्यिकीय प्रविधि :– शोध छात्रा द्वारा प्रस्तुत शोध में प्रतिशत विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया।

शोध प्राप्तियाँ

- हमारे निष्कर्ष बताते हैं कि सावित्रीबाई को समाज का अधिकांश वर्ग 98.10 प्रतिशत लोग जानते है।
- परिणाम से ज्ञात होता है कि सावित्रीबाई फुले ने विधवा–पुनर्विवाह का खुलकर समर्थन किया जिसमें लोगों के जागरूकता का प्रतिशत 52.40 सकारात्मक एवं 47.60 नकारात्मक रही।
- अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि सावित्रीबाई फुले को श्ज्ञान की देवीश कहा जाता है जिसमें लोगों की जागरूकता का प्रतिशत 66.80 नकारात्मक एवं 33.20 प्रतिशत सकारात्मक रहा।
- इस अध्ययन से पता चलता है कि समाज के 27.70 प्रतिशत लोग सावित्रीबाई फुले के पारिवारिक पृष्ठभूमि से अनभिज्ञ है तथा अधिकांश 72.30 प्रतिशत लोगों को यह पता है कि वे दलित परिवार से थीं।
- हमारे निष्कर्ष बताते है कि रात्रिकालीन पाठशाला की शुरूआत फुले दम्पति द्वारा किया गया इस तथ्य से भी समाज के 87.90 प्रतिशत लोग भिज्ञ है तथा शेष 12.10 प्रतिशत लोग अनभिज्ञ है जो चिंता का विषय है।
- निष्कर्ष बताते है कि सावित्रीबाई फुले के कवयित्री रूप को कम ही लोग जानते है एवं उनकी कविताओं के बारे में लोगों की जागरूकता का प्रतिशत बहुत ही कम है।
- अध्ययन से ज्ञात होता है कि सावित्रीबाई फुले जैसे महान व्यक्तित्व के द्वारा सामाजिक सेवा हेतु खोला गया प्रथम विद्यालय श्पुणेश में स्थित है, यह तथ्य कम लोगों को पता है अर्थात् 45.10 प्रतिशत लोग ही जानते है तथा 54.90 प्रतिशत लोग नहीं जानते है।
- आज के समय में विभिन्न प्रकार के उपकरणों की भरमार होने के बावजूद भी समाज का शिक्षित वर्ग इस बात से अनभिज्ञ है कि सावित्रीबाई फुले ने सतीप्रथा, बाल–विवाह जैसे सामाजिक कुरीतियों का खुलकर विरोध किया।

निष्कर्ष

शोध छात्रा द्वारा प्रस्तुत शोध में आवश्यकतानुसार प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों से आकड़े (ऑनलाइन) एवं तथ्य एकत्र कर विश्लेषण किया गया। निष्कर्ष यह निकलकर आया कि सावित्रीबाई फुले जैसी महान समाजसेविका के बारे में अधिकाशतः लोग अनभिज्ञ है उनके जीवन से सम्बन्धित, कृतित्व से सम्बन्धित पुस्तकों, पाठ्य सामग्री की कमी है जिसकी अनुभूति शोध छात्रा को इस लघुशोध प्रबन्ध को प्रस्तुत करने के दौरान हुई। जिसका निस्तारण अतिआवश्यक है।यह बड़ी ही चिंता का विषय है, कि जिन्होंने शिक्षा की ज्योति सर्वप्रथम जलाई, उन्हीं के प्रकाश से सम्पूर्ण स्त्री वर्ग प्रकाशमय है, ऐसी महान विभूति से आज का समाज कैसे अनभिज्ञ हो सकता है।

सुझाव

इस अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में कुछ सुझाव इस प्रकार है।

- आज वंचित वर्ग की शिक्षा दिशा–विहीन है, सावित्रीबाई फुले के विचारों से वंचित वर्ग का पुनरूत्थान हो सकता है।
- राज्य सरकार व केन्द्र सरकार को चाहिए कि शिक्षा के पाठ्यक्रम में सावित्रीबाई फुले के विचारों को स्थान प्रदान करें ताकि शिक्षार्थियों का सर्वागीण विकास हो सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति निर्माण में सावित्रीबाई फुले के विचार उचित दिशा प्रदान कर सकते हैं।
- शिक्षाविदों को चाहिए कि सावित्रीबाई फुले के सामाजिक कार्य, शैक्षिक विचार सम्बन्धी शोधकार्य को विस्तार दें।
- कार्यशाला व संगोष्ठी का आयोजन किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. अग्रवाल,एल0पी0 "एजुकेशनल रिसर्च" स्वास्तिक पब्लिकेशन,दिल्ली, 2013, 1–5 ।
2. अग्रवाल, जे0 सी0 , अग्रवाल,एस0पी0 (1992). "वुमेन एजुकेशन इन इण्डिया", कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, दिल्ली, पेज 18–21 ।
3. आगलावे, सरोज (2005). "ज्योतिबाराव फुले का सामाजिक दर्शन", सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, पेज 85–92 ।
4. चंचरीक, कन्हैयालाल (2003). "आधुनिक भारत का दलित आन्दोलन", यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पेज 40–45 ।
5. चौहान, दिनेश (2013). "दलित समाज की समस्यायें", रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पेज 26–29 ।
6. तिलक, रजनी (2017). "सावित्रीबाई फुले रचना समग्र" द मर्जिनलाइव्ड पब्लिकेशन, दिल्ली, पेज 98 ।
7. पाण्डेय, वी0 सी0 (2012). "एजुकेशन कल्चर एण्ड ह्यूमन वैल्युज", इशा पब्लिकेशन्स, पेज 90–94 ।
8. बौद्ध, शांति स्वरूप (2004). "सावित्रीबाई फुले सचित्र जीवनी", सम्यक प्रकाशन, इलाहाबाद, पेज 38 ।
9. भारती,अनिता (2015). "सावित्रीबाई फुले की कवितायें", स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली ।
10. माली, एम0 जी0 (2011). "क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले", पब्लिकेशन डीविजन, गवर्मेन्ट ऑफ इण्डिया।
11. राय, विनीत, रीता (2018). "फर्स्ट इण्डियन वुमन टीचर सावित्रीबाई फुलेः बायोग्राफी ऑफ सावित्रीबाई फुले", एजुकेशन पब्लिशिंग, नई दिल्ली, पेज 51– 53 ।
12. वैद्य प्रभाकर (1992). "ज्योतिबा फुले और उनकी परम्परा", लोक वाड.मय, मुम्बई, पेज 85–90 ।